International Journal of Sanskrit Research 2015; 1(4): 96-97

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2015; 1(4): 96-97
© 2015 IJSR
www.sanskritjournal.com
Received: 20-04-2015
Accepted: 24-05-2015

डा. हर्षबाला
Assistant Professor
Janki DeviMemorialCollege
Karol Bagh University of Delhi

Correspondence
डा. हर्षबाला
Assistant Professor
JankiDeviMemorialCollege
Karol Bagh University of Delhi

संस्कृत साहित्य में शकुन : एक अध्ययन

डा. हर्षबाला

शकुनों पर आस्था व विश्वास सुदूर वैदिक युग से ही प्रारम्भ होता है उद्धरणों से पता चलता है शकुन की उत्पत्ति और विकास वैदिक काल से भी पहले हो चुका था। संस्कृत साहित्य के इतिहास पर विहंगम दृष्टि डालने पर रामायण, महाभारत आदि महाकाव्यों में शकुन शास्त्र का विराम होता दिखायी देता है। संहिता स्कन्ध के अन्तर्गत आने वाले ग्रन्थों में वराहमिहिर रचित वृहत्संहिता (505 ई.) में शकुनों पर सामग्री मिलती है। इसके पश्चात् नारद–संहिता, रावण संहिता, वशिष्ठ संहिता, वसन्तराजशकुन, अदभुतसागर आदि ग्रन्थों में भी ऐसे उल्लेख मिलते हैं। हैं। यही नहीं ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों के अतिरिक्त भी वैदिक और संस्कृत साहित्य के ग्रन्थों में भी ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जिनमें शकुन से सम्बन्धित सामग्री मिलती है। ये हैं –

ऋग्वेद : ऋग्वेद में वर्णन आया है कि यह स्तोत्रों से स्तुत किया जाने वाला ओउम् यज्ञस्थान में रखा है जैसे शकुन नामक पक्षी शीघ्र दौड़ता है।[1]

अथर्ववेद : संहिता शास्त्र के विषयों का विकास अथर्ववेद से आरम्भ होकर सूत्रकाल में विशेष रूप से हुआ। अथर्ववेद में भूकम्प विदीर्ण भूमि, उल्का, धूमकेतु, सूर्यग्रहण एवं लाल दूध देने वाली गौ को अशुभ सूचक मानकर उनसे उत्पन्न होने वाले उपद्रवों की शांति के लिये स्तुति की गई है।[2]

आपस्तम्ब गृह्यसूत्र में सिर या किसी अन्य भाग पर वृक्ष से फल गिरना, पक्षी द्वारा पंखों का फड़पफड़ाना मेघहीन आकाश से बूँदों का गिरना, अगारस्थूषों में अंकुरों का उत्पन्न होना, अंगारों का प्रवेश अशुभ माने गये हैं तथा उनके निराकरण की विधि का उल्लेख किया गया है।[3]

इस प्रकार वैदिक काल से ही प्रचुर शकुनों का फल और शान्तिविधानों का उल्लेख मिलता है। वैदिक काल में प्राप्त शकुनों का यह प्रवाह संस्कृत काव्य तक जाता हुआ दीखता है।

मृच्छकटिक (ई.पू. द्वितीय शताब्दी) शूद्रकरचित इस नाटक में कई शकुनों का उल्लेख आता है। यथा – चारुदत्त अपने बाँयी आँख के फड़कने का वर्णन करते हैं।[4] अन्य स्थान पर काक की बोली से सम्बन्धित शकुन प्रकट हो रहा है। जो अशुभ बोली बोल रहा है और चारुदत की बाँयी आँख फड़क रही है।[5] ये दोनों ही अपशकुन भावी अशुभ सूचना दे रहे है। फलत चारुदत को मृत्यदंड के रूप में आने वाली भावी विपत्ति की सूचना मिलती है। शकुनों से सम्बन्धित पर्याप्त ज्ञान और जानकारी कालिदास की कृतियों में मिलती है। यथा

अभिज्ञानशाकुन्तम् : अभिज्ञानशकुन्तलम् नाटक (ई.पू. प्रथम श.) में कण्व के आश्रम में प्रवेश करते समय दुष्यन्त की सीधी भुजा का फड़कना सुन्दर स्त्री की प्राप्ति का सूचक माना गया है।[6] दक्षिण भुजा का फड़कना राजा दुष्यन्त के लिए सुन्दर स्त्री की प्राप्ति का ही सूचक नहीं अपितु खोई हुई स्त्री की प्राप्ति का सूचक भी माना गया है।[7]ऋषि कण्व द्वारा शकुन्तला को दुष्यन्त के पास भेजने के समय अमंगलसूचक शकुन के रूप में शकुन्तला के दाहिने नेत्र का फड़कना, जिसका भावी पफल दुष्यन्त को शकुन्तला की स्मृति न रहना है।[8] इस प्रकार कालिदास के समय में अगंस्फुरण सम्बन्धी शकुन का प्रचलन था उसे भावी शुभाशुभ फल के लिए देखा जाता था। गीतिकाव्यों में भी शकुनों को पर्याप्त स्थान दिया गया है। यथा –

मेघदूत (ई.पू. प्रथम श.) मेघदूत में शापग्रस्त यक्ष द्वारा अपनी प्रेयसी को मेध द्वारा संदेश भेजने के समय मन्द–मन्द अनुकूल वायु का चलना, वाम भाग में चातक का मधुर शब्द करना, पंक्ति बद्ध बलाकाँयों का दर्शन करता है[9]। अतः यहाँ यात्राकालीन तीन शुभ शकुन प्रकट हो रहे हैं।

रघुवशं महाकाव्य (ई.पू. प्रथम श.) रघुवंश में राजा दिलीप का पत्नी सुदक्षिणा सहित पुत्र कामना के लिए ऋषि वसिष्ठ के आश्रम में जाना, और उस समय अनुकूल वायु का चलना[10] और दिलीप वशिष्ठ की बातचीत के मध्य नन्दिनी का प्रवेश शुभ शकुन है।[11]ऋषि वशिष्ठ शकुन शास्त्रवेत्ता थे उनके अनुसार यह मनोरथ सिद्धि का सूचक शकुन है। पुनः नन्दिनी के साक्षात् प्रकट होने पर ऋषि वशिष्ठ

द्वारा दिलीप की मनोरथ सिद्धि की भविष्यवाणी करना।[12] यहाँ उल्कापात, उत्पात आदि शब्दों की चर्चा भी मिलती है। जो उस समय के निमित्तों के प्रचलन के सूचक है। वशिष्ठ के यज्ञ कार्यों के द्वारा यज्ञ की महत्ता को शान्ति विधान के रूप में मानते हुए उत्पात, उल्कापात, भूकम्प आदि अरिष्टों से रक्षा की जा सकती है ऐसा माना है।[13]

कादम्बरी (सांतवी शताब्दी) बाणभट्ट रचित कादम्बरी के समय भी शकुनों का वर्णन मिलता है। विन्ध्याटवी आश्रम के वर्णन के समय सूर्यग्रहण को किसी महापुरुष की मृत्यु का सूचक माना गया है।[14]

हर्षचरित (सातवीं शताब्दी) हर्षचरित में धूलिकणों और छोटे पत्थरों से युक्त तथा सांय–सांय ध्वनि से युक्त पवन का चलना, हर्षवर्धन के ज्येष्ठ भ्राता राज्यवर्धन की मृत्यु का सूचक अशुभ शकुन हैं।[15]पुनः उनके पिता के मृत्युसूचक श्रृगालियों का अशुभ बोली बोलना अपशकुन है।[16]

नैषधीयचरित महाकाव्य (बारहवीं शती) हंस की यात्रा के समय करिशावक का दर्शन शुभ माना गया है और हंस की यात्रा के प्रारम्भ में तेदुंआ और सर्प का दर्शन न होना अभीष्टसिद्धि का सूचक माना गया है।[17]

जयन्तविजय महाकाव्य (तेरहवीं शती) इसमें राजा विक्रमसिंह तथा रानी प्रीतिमती के लिए रानी के लिए वाम नेत्रा के स्फुरण पर उनके अभीष्ट की अर्थात् पुत्रप्राप्ति का सूचक होने के कारण शुभ माना है।[18]

विजयप्रशस्ति महाकाव्य (सत्राहवीं–शती) विजय प्रशस्ति महाकाव्य में जयविमल मुनि की यात्रा के समय मार्ग में नकुल का बाँये से सीधी और जाना[19] और अन्य स्वप्नों से सम्बन्धित शकुनों का वर्णन है। जिसमें श्रेष्ठि पत्नी कोडिम देवी को स्वप्न में उत्संगगत सिंह का दर्शन भावी फल उत्तम पुत्र की प्राप्ति का सूचक शुभ शकुन है।[20]

दयानन्ददिग्विजय महाकाव्य (बीसवीं शती) स्वामी जी के जन्म के अवसर पर जल का निर्मल होना और अग्नि का अनुकूल प्रज्वलित होना शुभ माना गया है।[21] इस प्रकार संस्कृत साहित्य में अनेक काव्यों और नाटकों में हमें शकुनों की मान्यता और विश्वास का ज्ञान होता है। स्वप्न, अंगस्फुरण, पशु–पक्षियों से सम्बन्धित शकुन, उल्कापतन, ग्रहजन्य शकुन आदि का वर्णन, शकुनों के पूर्णप्रभाव तथा विश्वास को मान्यता देता है। शकुनों पर यह विश्वास भारत में तो था ही अपितु भारतेतर स्थानों में भी शकुनों पर विश्वास के उदाहरण मिलते है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अयं मतवाऽछकुनों यथां हिताऽत्येससार पवमान ऊर्मिणा।
   ऋ., 9/86/13
2. शं नो भूमिवैप्यमाना शमुल्का निर्हंतं चयत्।
3. शं गावो लोहितक्षीरा शं भूमिख तीर्यती।।
   अर्थ, 19/9/8
4. यद्येन वृक्षात्पफलभिनिपतेद्रवयो वाऽमिविक्षिपेदवर्षतर्क्ये वा बिन्दूरमिनिपत्तेत्तदुत्तरैर्थथालिंग प्रक्षालयति अगारस्थूणाविरोहिणे मधुन उपवेशने कुपत्वां कपोत पददर्शनऽमात्यानांशरीररेषषेन्येषु चादभुतोत्पतेष्वमावास्थायां निशायां यत्रांपा न शृणुयात्तदग्नेरुपसमाधनाधज्यभागान्त उत्तरा आहुतीर्हुत्वा जयादि प्रतिपद्यते
   आप.गृ., 8/2
5. अपश्यताऽद्य तां कान्तां वामं स्पुफरति लोचनम्।
   अकारण परित्रस्तं हृदयं व्यथते मम्।।
   मृच्छ. 7/7–9
6. रुक्षस्वरं वारति वायसाऽय, ममात्यभृत्या मुहुराह्वयन्ति।
   सत्यं च नेत्रां स्फुरति प्रसह्य, ममानिमित्तानि हि खेदयान्ति।।
   पण वही, 9/9,10
7. शानमिदमाश्रमपद स्फुरति च बाहुः कुतः फलमिहास्य।
8. अथवा भवितत्यतानां द्वाराणि भवन्ति सर्वत्र।।
   अभि शा., 1/14
9. मनोरथाय नाशंसे किं बाहो स्पन्दसे वृथा।
   पूर्वावधीरित श्रेयो दुःख हि परिवर्तते।।
   वही 7/13[1]
10. अहो! किं मे वामेतंर नयनं विस्फुरति
    वही, 5/12, पृ. 307–308
11. अहो! किं मे वामेतंर नयनं विस्फुरति[1] मन्दं–मन्दं नुदति पवनश्चानुकूलो यथा त्वां! वामश्चायं नदतिमधुरं चातकस्ते संगन्धः।। गर्भाधनक्षणपरिचयान्नूनमाबद्धमालाः। सेविष्यन्ते नयनसुभंग खे भवन्तं बलाका।।
12. मे,दू. पूर्वमेध, 10/25
13. पवनस्यानुकूलत्वात्प्रार्थना सिद्धि शंसिनः।
    रजोभिस्तुरगोत्कीर्णेरस्पृष्टालकवेष्टनौ।।
    रघु, 1/42
14. तां पुण्यदर्शानां दृष्टवा निमितज्ञस्तपोनिधिः।
    याज्यमांश सिताबन्ध्यप्रार्थनं पुलरब्रवीत।।
    वही, 1/86
15. अदूरवर्तिनी सिद्धिं राजन्विगणयत्मनः।
    उपस्थितेयं कल्याणी नाम्नि कीर्तित एव यत्।।
    वही, 1/87
16. पुरुषायुषजीविन्यो निरातङ्का निरीतयः।
    यन्मदीयाः प्रजास्तस्य हेतुस्त्वद्रब्रह्मवर्चसम्।।
    वही, 1/63
17. का., पूर्व भाग,
    पृ. 44
18. राज्यसंचारसूचकः संचारयतीव क्ष्मां क्वापि वहद्वलरजः पटलकलिलशर्करशकलसूत्कारी मारुत। न कुशलमिव पश्यामि लग्नस्य। सर्वथा स्वस्ति भवत्वार्याय।
    हर्ष उच्छ्वास, पृ. 186
19. शनैःशनैश्च महापुरुषविनि पात पिशुनाः संम समन्तात् समुद्रभवन्भुवनें भूयांसो भूपतेरभावाय भयमुत्पादयन्तो भूतानां महोत्पाताः। तथाहि .... विरसविदाविणीनामुन्मुखीनां क्वाशिरे शिवानां राजयः।।
    वही 5/162
20. नभसः कलभैरुपासिंत, जलर्दभूरित रक्षुपन्नगम्।
    स ददर्श पतंग पुंगवो विटपच्छन्नतरक्षुपन्नगम।।
    नैष, 2/67/89
21. जय. वि., 3/41
22. आनन्दकन्दसदृशा स्वदृशा पुरस्तात्।
    पश्यन् पथिप्रचलंता परमद्विसिद्धया।।
23. सत्येतरः सुवृतिनाऽस्य विनेयवृन्द।
24. चन्द्रस्य पेशलकुलो नकुलोजगाम।।
    वि.प्र. 6/6/231
25. वही, पृ. 63
26. दया, दि, 3/57–58/45